Research Paper Hindi

Vimarshmulak Meemansa ke nikash par Aasgar Vajahat ka Saat Aasmaan

विमर्शमूलक मीमांसा के निकष पर असगर वजाहत का 'सात आसमान'

Dr. Kiran Grover

Associate Professor, Academic Department: P G Department of Hindi Institutional Affiliation: D A V College, Abohar (Punjab)

ABSTRACT

समय के सच को उजागर करने के साथ गुणात्मक साहित्य सदैव प्रासंगिक रहता है।विमर्श शब्द सोच विचार, विचार विनिमय, चिन्तन मनन,परामर्श,विवेचना, आलोचना, वितर्क, अनुसंधान, अधीरता को द्योतित करता है।साहित्य के सन्दर्भ में विमर्श की संकल्पना आधुनिक काल की देन है।विगत दो दशकों से विमर्श की संकल्पना साहित्य मीमांसा में प्रयुक्त हो रही है।हिन्दी औपन्यासिक साहित्य के इतिहास में असगर वजाहत जी का चुनौती मय कदम है जिसमें बाह्यजगत व अन्तर्जगत की कथा अन्तर्गुम्फित प्रतिबिम्बित होती है। असगर वजाहत जी ने 'सात आसमान'उपन्यास में विमर्शमूलक मीमांसा की संकल्पना के अन्तर्गत विघटन विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सत्ता विमर्श, शिक्षा विमर्श का प्रभावशाली चिन्तन किया है।महानगर की महंगी ज़िन्दगी आदमी को मूल्य तोड़ने के लिए बाध्य करती है जिसका परिणाम होता है –विघटन। राजनीति में अवसरवादिता व मूल्यहीनता की राजनीति का शब्द चित्र खीचते हुए मूल्यों की टूटन व राजनीतिक पतन को दर्शाया गया है। कॉलेजों के बिगड़ते माहौल के कारण छात्र जगत में रैगिंग अपराध वृत्ति दृष्टिगत हो रही है। इस उपन्यास में विमर्शमूलक मीमांसा की संकल्पना में विमर्श के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया है जोकि असगर वजाहत जी का चुनौतीमय कदम है।

KEYWORDS असगर वजाहत,सात आसमान,विमर्श,मीमांसा ,संकल्पना।

मूल प्रतिपादनः–साहित्य अपने भीतर बाहर सार्वभौमिक मूल्यों, सन्देशों व उद्देश्यों को समाहित किये रखता है क्योंकि साहित्य सार्वकालिक, सार्वदेशिक व सार्वभौमिक होता है।सच्चा साहित्यकार अपनी वैयक्तिकता को पिघला कर उसे समाजीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। वैयक्तिकता को निर्वैयक्तिकता में परिणित करना ही कला है जो पाठकों को मंत्रमुग्ध करती है। समय के सच को उजागर करने के साथ गुणात्मक साहित्य सदैव प्रासंगिक रहताा है तथा जन मानस को आलोक प्रदान करने के साथ दिशा निर्देश भी देता है। साहित्य में 1960 के बाद विमर्श की अवधारणा दृष्टिगत होती है।साहित्य के सन्दर्भ में विमर्श की संकल्पना आधुनिक काल की देन है।

वर्तमान में जब साहित्य परिचर्चा होती है तो 'विमर्श' शब्द स्वतः बहस के केन्द्र में आ जाता है। शब्द प्रयोग की दृष्टि से 'विमर्श' शब्द अत्यन्त प्राचीन है।'विमर्श' का अर्थ है–सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, किसी बात या विषय पर कुछ सोचना, समझना, विचार करना, गुण–दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना, जांचना और परखना, कसी से परामर्श या सलाह करना, ज्ञान।[1] विमर्श' शब्द अत्यंत व्यापक है, जिसकी उत्पत्ति मृश् धातु में वि–उपसर्ग तथा घञ् प्रत्यय लगाकर हुई है। अतः 'विमर्श' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ विचार–विमर्श, सोचना, समझना, आलोचना करना है। नालन्दा विशाल शब्द सागर में विमर्श को, "किसी बात का विचार या विवेचन, आलोचना, समीक्षा, परीक्षा, परखने का काम परामर्श, सलाह, अधीरता, असंतोष।"[2] के अर्थ में लिखा गया है। मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश में 'डेलीबरेट' का अर्थ, सुचिंतित, जानबूझकर किया गया, इरादे के साथ, विचारपूर्वक सोद्देश्य, निश्चित और सुचिंतित बताए गये इसके अन्य अर्थ सचेत, चौंकना, सावधान, विवेकशील, सोच–समझकर फैसला करने वाला, बताए है[3]. अर्थात, विमर्श का अर्थ सलाह करना, बहस करना, विचार–विमर्श, सोच–विचार, सलाह–मंत्रणा, वाद–विवाद, धीरता सतर्कता है।

विमर्श शब्द सोच विचार, विचार विनिमय, चिन्तन मनन,परामर्श,विवेचना, आलोचना, वितर्क, अनुसंधान, अधीरता को द्योतित करता है। वास्तव में किसी विषय विशेष के सन्दर्भ में गंभीरता से चिन्तन, मनन , विवेचन, विचार विनिमय व सोच विचार करना विमर्श कहलाता है। विमर्श ही समकालीन उपन्यासों की शक्ति है। विगत दो दशकों से विमर्श की संकल्पना साहित्य मीमांसा में प्रयुक्त हो रही है। विविध विमर्शमूलक विचारों का अंकन हिन्दी के समकालीन उपन्यासों में विस्तार से हुआ है।[4]आधुनिक काल में विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, स्त्री विमर्श, झुग्गी झोंपड़ी विमर्श, आदिवासी विमर्श, विघटनविमर्श, विखंडन विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सत्ता विमर्श, शिक्षा विमर्श, सेक्स विमर्श, श्रमिक विमर्श, बाज़ार विमर्श, पंजाबी संस्कृति विमर्श आदि का समकालीन उपन्यासों में विश्लेषण किया गया है। कथाकारों ने अपने अनुभवों, आंखों देखी घटनाओं के माध्यम से सड़ी गली सामाजिक व्यवस्था पर चोट की है। प्रखर व मुखर पात्र हमेशा से कथाकारों का कथ्य बनते रहे हैं और कथाकारों ने अपने अनुभवों से गुज़र कर लिखा है।

हिन्दी कथाकारों की सशक्त पीढ़ी है जिन्होंने अपने रचना संसार को विविध रूप रंग से सुसज्जित किया है। असगर वजाहत उन लेखकों में परिगणित किये जाते हैं जिन्होंने भोगे हुए क्षणों को समाज के समक्ष बेबाकी से प्रस्तुत करते हुए अपने 'सात आसमान' उपन्यास के माध्यम से जीवन का तूफ़ान, तूफ़ान का सैलाब, भावनाओं की सघनता, तनावों के कसाव को वाणी देने का सातत्य प्रयास किया है। ' सात आसमान' हिन्दी औपन्यासिक साहित्य के इतिहास में असगर वजाहत जी का चुनौती मय कदम है जिसमें बाह्यजगत व अन्तर्जगत की कथा अन्तर्गुम्फित प्रतिबिम्बित होती है। निश्चय ही हिन्दी साहित्य के इतिहास में असगर वजाहत जी ने लोकप्रियता अर्जित की है। भावनाओं के साधम्मर्य में साहित्य–प्रेमियों को असगर वजाहत जी के साहित्य से सहज आकर्षण प्रतिभासित होता है। असगर वजाहत जी ने 'सात आसमान'उपन्यास में विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत विघटन विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सत्ता विमर्श, शिक्षा विमर्श का प्रभावशाली चिन्तन किया है जिसका विवेचन इस प्रकार है–

विघटन विमर्शः–विघटन विमर्श आधुनिक काल के चिन्तन का विषय है। विघटन की स्थितियां इसी कालखण्ड का सूचक हैं।विघटन के कारणों पर प्रकाश डालते हुए नीरज जैन जी ने लिखा हैः–'' आधुनिक सभ्यता व ज्ञान विज्ञान के प्रसार ने मनुष्य में अतिशय भौतिकतावादी दृष्टि ही प्रसार नहीं किया अपितु उनके मूल्यों को भी विघटित करके रखा है।''[5] विघटन मूलतः एक वृति एवम् स्थिति का नाम है। विघटन में मूलतःपृथक्ता, भ्रष्टता व विनाशता निहित होती है। विघटन में पार्थक्य, बिखराव, टूटन, बर्बादी आदि विषयक सोच विचार व चिन्तन होता है। मानव जाति के विकास के लिए विघटनकारी मानसिकता एक बहुत बड़ा अवरोध है। वर्तमान परिवेश में व्यक्त, परिवार व समाज के स्तर पर विघटन की स्थिति दृष्टिगत होती है। शासकीय व्यवस्था भ्रष्टाचार से खोखली होती जा रही है। अति बौद्धिकता अहंकार को जन्म देती है जिससे विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है। प्रशासकीय अधिकारी नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे कर घूस ले कर काम करने लगे हैं। मनुष्य का स्वभाव व जीवन व्यवहार कभी कभी पशुता को मात देता है। नियमों, परम्पराओं ,सिद्धान्तों, मूल्यों को तिलांजलि देने पर मनुष्य व्यथित हो जाता है।विघटन के अनेक पहलू यथा स्वार्थ, घूस, स्वभागवत भिन्नता, स्वयं निर्णय, अहम्, अति बौद्धिकता के परिवेश में पनप रहे हैं। गरीबी और विघटन ने समाज और राजनीति में चिन्ताजनक स्थिति पैदा कर दी। सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों ने अपनी सीमाओं को लांघकर विघटन को अभिवृद्ध किया। डाक्टर रामविलास शर्मा जी की मान्यता है कि ''आर्थिक स्तर पर जनता की गरीबी अपनी जगह है ,राजनीतिक स्तर पर अपने देश के विघटन की समस्या और तीव्र हो गई।–––जनता को तरह तरह से आतंकित करने में 1992 और 93 के वर्षो ने पुराने सभी युगों को पीछे छोड़ दिया। ''[6]स्पष्ट है कि अब विघटन के परिवेश ने ही 'विघटन विमर्श' को जन्म दिया।हिन्दी उपन्यासों में विघटनकारी स्थितियों से समन्वित विचारों को अभिव्यक्ति मिलने लगी।

विघटन की स्थिति शासकीय कार्यालयों, सहकारी संस्थाओं ,गांवों, शहरों व महानगरों में उत्तरोतर बढ़ती जा रही है।विशेषतः शहरी आदमी में छलावा दृष्टिगत होने लगा है। पैसे का महत्त्व अधिक बढ़नेलगा है। पैसे को पाने के लिए मानव नैतिक मूल्यों को तिलांजलि देने लगा है। असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में शहरी व्यक्ति का चित्र इस प्रकार रूपायित किया हैः–''उसकी आंखों में हर चीज़ की एक कीमत हो जाती है। वह दलालों का निर्माण करता है और उन पर विश्वास करता है। वह हमेशा आगे की तरफ देखता है और अपार संभावनाओं में जीना उसकी मजबूरी बन जाती है।''[7] महानगर की महंगी ज़िन्दगी आदमी को नैतिकता व मूल्य तोड़ने के लिए बाध्य करती है जिसका परिणाम होता है –विघटन।

सत्ता विमर्शः– सत्ता से तात्पर्य है–प्रभुत्व। वास्तव में जिनके हाथ में अधिकार,प्रभुत्व या शासनसूत्र होता है वही सत्ताधीश कहलाता है। राजसत्ता से सम्बन्धित नीति को राजनीति कहा जाता है और राजनीति से सम्बन्धित विचार चिन्तन सत्ता विमर्श/ राजनीतिक विमर्श कहलाता है। सत्ता विमर्श वह है जो अधिकार,प्रभुत्व,शक्ति और प्रशासन सम्बन्धी विचार दर्शन को प्रस्तुत करता है। सत्ता विमर्श में सत्ता व सत्ताधारी, राजनीति , राजनेता, तथा प्रशासन व प्रशासन सम्बन्धी विचार विमर्श की पहल होती है। वस्तुतः सत्ता विमर्श की संकल्पना आधुनिक काल की देन है। भारतीय राजसत्ता ने आधुनिक काल तक विभिन्न रूपों से करवटें बदली हैं। सत्ता से जुड़े हुए सत्तासीन राज्यकर्ता के आलोचना के सही दायित्व का निर्वाह आधुनिक कालीन साहित्यकारों ने ही किया है। राजनीति का कड़वा सच, उसका कृष्णधवल रूप,उसकी कठोर आला.

`चना हिन्दी उपन्यासों में दिखाई देती है। सत्ता विमर्श का मूल कारण स्वप्नभंग तथा भ्रमभंग है। जिन सपनों ले कर आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी, वे साकार नहीं हुए। सपनों की टूटन नसीब हुई जिसका प्रधान कारण राजनीति है। वर्तमान राजनीति व सत्ता का सच यही है कि उसका सदुपयोग कम और दुरूपयोग अधिक होने लगा है। राजनीति में अवसरवादिता व मूल्यहीनता बढ़ती जा रही है। सत्ता को पाने के लिए गुंडों की मदद लेने में परहेज़ नहीं किया जाता। असगर वजाहत के 'सात आस. मान' उपन्यास में स्वाधीनता के बाद की राजनीति का शब्द चित्र खीचा गया है:–'' देखते देखते लोग बदल रहे थे। कल के फटीचर लोग एम एल ए और एम पी हो गये थे।कलक्टर उनको देखकर खड़ा हो जाता था। बन्निए वकालों ने खद्दर की टोपियां लगा ली थी। गुंडों को इलैक्शनों में मजे आते थे। सरकारी पैसा पानी की तरह बह रहा था।''[8]इस शब्द चित्र के माध्यम से राजनीति में हो रहे मूल्यों की टूटन व राजनीतिक पतन को दर्शाया गया है।

शिक्षा विमर्श:– शिक्षा जीवन विकास का मुख्य साधन है।व्यक्ति, समाज, राष्ट का उत्थान शिक्षा के बलबूते पर ही संभव होता है। शिक्षा का प्रधान उद्देश्य है– व्यक्ति का सर्वांगीण विकास। शिक्षा के माध्यम से शारीरिक, मानसिक,भावात्मक, बौद्धिक एवम् चारित्रिक दृष्टि से शिक्षार्थी का विकास आपेक्षित होता है। व्यक्ति सम्बन्धी गहन चिन्. तन ही मूलतः शिक्षा विमर्श है। शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न आयामों का सोच विचार, विवेचन विश्लेषण, तद्विषयक समीकरण हुआ करता है, वह शिक्षा विमर्श कहलाता है। शिक्षा के प्रचार प्रसार के अभियान में राधा कृष्ण आयोग,कोठारी आयोग की स्थापना कर शिक्षा विषयक नीति का निर्धारण किया जाता है। शिक्षा की बहुआयामी अभिव्यक्ति समकालीन उपन्यासों में प्रखरता से परिलक्षित होती है।[9]हिन्दी उपन्यासों में शिक्षा जगत की नई समस्याओं का उनके उत्थान व पतन का ईमानदारी के साथ उद्घाटन किया जाता है। शिक्षा की सुविधा भारत की महती उपलब्धि है। वर्तमान जगत में परीक्षा व्यवस्था अव्यवस्था व अनाचार में बदल गई है। अध्यापकों का शोषण शिक्षा के क्षेत्र को और भी दयनीय बना देता है।शिक्षा की सुविधा यत्र तत्र सर्वत्र होती गई किन्तु उससे नई –नई समस्याएं उत्पन्न होती गई।पश्चिमी शिक्षा जगत के अनुकरण से नई पीढ़ी के छात्रों में रैगिंग की प्रवृत्ति बढ़ती गई। वरिष्ठ छात्र नवागत छात्रों से अमानवीय व्यवहार करने लगे। जहां शिक्षण संस्थाओं में मूल्यपरक शिक्षा मिलनी चाहिए थी वहां गुनहगारी प्रवृत्ति पनपने लगी।असगर वजाहत के 'सात आसमान' उप. न्यास में कथानायक व उनके भाई अलीगढ़ विश्वविद्यालय में रैगिंग की चपेट में आ जाते हैं:–'' जूनियर लड़कों को एक कमरे में बन्द कर दिया गया और एक एक को इस तरह बाहर ले जाया था जैसे हलाल करने ले जाया जा रहा हो। बाहर लॉन में खिंचाई किये जाने की आवाज़ें, ठहाके और गालियां अन्दर तक सुनाई देती थी और हम लोग सहम जाते थे।'[10] इस कथन से स्पष्ट होता है कि कॉलेजों का माहौल दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है तथा छात्र जगत में स्वच्छन्द वृत्ति के रूप में अपराध वृत्ति दृष्टिगत हो रही है।

अल्पसंख्यक विमर्श:–वस्तुतः जो संख्या में कम हो या अल्प हो वही अल्पसंख्यक है।अल्पसंख्यक की संकल्पना उस समुदाय के लिए प्रयुक्त होती है जिसकी संख्या कम होती है। स्वाधीनता की प्राप्ति के समय मुस्लिम संख्या देश में हिन्दुओं की तुलना में अल्प थी।इस विषय के सन्दर्भ में 'अल्पसंख्यक विमर्श' से हमारा आशय मुस्लिम जीवन विषयक विचार चिन्तन से है। हिन्दी उपन्यासों में अल्पसंख्यक विमर्श के रूप में मुस्लिम समाज का अंकन अत्यन्त यथार्थता के साथ व ईमानदारी से हुआ है।साम्प्रदायिक दंगों व फसादों ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों को क्षति पहुंचाई है।असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में भारतीय मुसलमानों को अधिक ईमानदार व सभ्य बताया है। प्रस्तुत उपन्यास में दादी के मौत के बाद वसीयत के अनुसार अब्बां मियां लाश को दफनाने के लिए इराक ले जाते हैं। यह यात्रा अब्बांमियां के लिए दर्दनाक प्रतिभासित होती है जैसे–'' अब्बां मियां जब वापिस आए थे तो अरबों के बारे में उनकी अच्छी राय न थी।वे उन्हें जाहिल, बुद्दू व लुटेरे किस्म के लोग कहते थे।वे ये भी बताते थे कि अरबों का ईमान उतना पक्का नहीं होता जि. तना हिन्दुस्तानी मुसलमानों का होता है।''[11] इस कथन से स्पष्ट होता है कि भारतीय परिवेश में मुसलमानों को अपने वतन से प्रेम है परन्तु उन्हें दंगे फसाद से कुछ लेना देना नहीं।

वर्तमान माहौल में जीवन को आधुनिक बनाने के लिए नए–नए आविष्कार प्रदान किये गए हैं। भारतीय मुस्लिम समाज बाहरी परम्पराओं से परित्यक्त नहीं हो सका। मुस्लिम स्त्री को पुरुष, परिवार , समाज तथा धर्म का दवाब हमेशा रहता है।असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में मुस्लिम स्त्री की इसी स्थिति का प्रभावशाली अंकन किया गया है। इस उपन्यास के रजी हुसैन खां के तीन बच्चों में से बड़े बच्चे जतन मियां की शादी अच्छे खानदान में धोखे से करवा दी जाती है। इस स्थिति के सम्बन्ध में लेखक स्वयं स्पष्ट करते हैं–''ब्याहकर जो बहू आई उसे जल्दी ही पता चल गया कि उसका मियां दीवाना है।बहू ने उफ तक न की। न तो उसने यह बात अपने घर वालों को बताई न अपने ससुराल वाला पर कोई इल्जाम धरा।''[12]इस उपन्यास की बहू का व्यवहार मुस्लिम समाज के पारम्परिक प्रभाव व दबाव का ही प्रतिफल है।

धार्मिक कट्टरता के संस्कार बचपन से ही मिलते हैं और धर्म सम्बन्धी मान्यताएं उनके समक्ष अंतिम हो जाती हैं। इस उपन्यास के जतन मियां जब चौथी कक्षा में थे तब से उनके मन में मुस्लिम धर्म विरोधी लोगों के बारे में क्रोध का भाव था।इस प्रवृति का चित्रण असगर जी ने इस प्रकार किया है:–'जतन मियां जब चौथी कलास में थे तो किसी ईसाई मास्टर की क्लास में रसूले खुदा की शान में कोई ऐसी वैसी बात कह दी। इसके जवाब में जतन मियां ने उसे क्लास के अन्दर ही उठाकर पटक दिया और उसका एक हाथ भी तोड़ दिया।''[13]जतन मियां के बचपन के व्यवहार में धार्मिक वैचारिकता की अपेक्षा धार्मिक भावात्मकता का भाव परिलक्षित होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति ने देश के विभाजन को एक ऐसा उपहार दिया जिसके परिणामस्वरूप भारत के मुसलमान पाकिस्तान जरूर गये परन्तु वे न तो पाकिस्तान को जानते थ. `।अपितु वे पाकिस्तान जाने से इन्कार भी करते रहे। असगर वजाहत के 'सात आसम. ान' उपन्यास में अब्बां मियां के माध्यम से सही सच उद्घाटित होता है:''अब्बां मियां ने एक बार किसी ने कहा कि आप पाकिस्तान क्यों नहीं चले जाते तो उन्होंने उनसे पूछा 'जनाब, ये पाकिस्तान है किस चिड़िया का नाम।'[14]इस कथन से स्पष्ट होता है कि आजादी से पूर्व आम मुसलमानों को पाकिस्तान बनाने का आग्रह नहीं था।

कथाकारों की सशक्त पीढ़ी में असगर वजाहत के 'सात आसमान' उपन्यास में विभिन्न वर्ग, समाज,विषय, विचार चिन्तन व स्थिति को केन्द्र बिन्दु में रखकर विमर्शमूलक वैचारिकता का उद्घाटन किया गया है। असगर वजाहत जी ने 'सात आसमान' उपन्यास में विघटन विमर्श, सत्ता विमर्श, शिक्षा विमर्श,अल्पसंख्यक विमर्श की अवधारणा ने विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया है जिससे स्पष्ट होता है कि इस उपन्यास में विमर्शमूलक मीमांसा की संकल्पना सहज रूप में मिलती है। निश्चय ही 'सात आस. मान' हिन्दी औपन्यासिक साहित्य के इतिहास में असगर वजाहत जी का चुनौती मय कदम है जिसमें बाह्यजगत के साथ–साथ अन्तर्जगत की कथा प्रतिबिम्बित होती है जिसके कारण असगर वजाहत जी ने लोकप्रियता अर्जित की है। उनके उपन्यास में विमर्शमूलक वैचारिक मीमांसा से वैयक्तिक, सामाजिक, वैश्विक उन्नयन की दिश. एं स्पष्ट होकर समकालीन समाजों को पहचान कर संवेदनशील पाठक सामाजिक समस्याओं के हल प्राप्त करके जीवन विकास की दिशाओं के माध्यम से उत्कर्ष का रास्ता खोज सकता है।

REFERENCES

1रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृश्ठ 77। द्य 2 नवल जी, नालन्दा विशाल शब्द सागर,, पृश्ठ 1276। द्य 3 सत्य प्रकाश, बलभद्र प्रकाश, मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश,, पृश्ठ 355। द्य 4 अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2008। द्य 5 नीरज जैन, व्यक्तित्व विघटन के विविध आयाम, नरेश प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002। द्य 6 राम विलास शर्मा,प्रेमचन्द और उनका युग,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, चौथी आवृति–2004। द्य 7 असगर वजाहत,सात आसमान,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण1996,पृ 20। द्य 8 वही पृ 113। द्य 9वही पृ 176। द्य 10 वही पृ 39। द्य 11 वही पृ 64। द्य 12अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2008। द्य 13 असगर वजाहत,सात आसमान, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996,पृ 65। द्य 14 वही पृ 155।